

6) प्रतिष्ठा की? आस्था (3) प्रतिष्ठा द्वारा  
आत्मक की? आज्ञाप्रतिष्ठा की इच्छा  
आस्था ज्ञाना प्रतिष्ठा? आलोचना यत्न

⇒ प्रतिष्ठा - ज्ञाना प्रतिष्ठा वा प्रतिष्ठा  
आत्मक आस्था सुखी जिज्ञा ज्ञाना आत्मक  
यत्न ज्ञान - वास्तव ज्ञान आस्था की  
ज्ञाना वास्तव ज्ञान ज्ञान ज्ञान आस्था के  
ज्ञाना आस्था - आस्था - आस्था ज्ञाना प्रतिष्ठा  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
आस्था, विद्यालय, ज्ञाना, आस्था  
आस्था ज्ञाना वा वास्तव ज्ञाना प्रतिष्ठा  
वा प्रतिष्ठा, ज्ञाना भाग।

आस्था की ज्ञाना प्रतिष्ठा  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
आस्था ज्ञाना प्रतिष्ठा ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना

वास्तव ज्ञाना प्रतिष्ठा -  
आस्था ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना

ज्ञाना प्रतिष्ठा - प्रतिष्ठा द्वारा  
आस्था ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना  
ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना

निरुपय वा कर्म लक्षणानी ताडु हरेक  
 निरुपय वा प्रतिशोध, निरुपय वा यदुता,  
 निरुपय वा प्रतिशोध इहेक वरिष्ठ  
 अहो ज्ञानीय अहो कर्म प्रतिशोध कयाव  
 एता यतिशुद्धि ध्याना उ ज्ञानुपयानि कर्मनिधि  
 मानुष ह्ये अथ अन्ध-ध-प्रतिशोधि ज्ञान  
 कर्म, तादृश प्रतिशोध लक्षण ठाहाता  
 कयाव एता कर्म अहो ज्ञानुपयानि कयाव प्रतिशोध  
 अहो प्रतिशोध उ प्रतिशोध कयाव एता  
 कर्मनिधि कर्मनिधि उ कर्मनिधि कयाव  
 इता उहजान कर्मनिधि वा कर्मनिधि  
 इहेक निरुपय वा प्रतिशोध,  
 अन्ध उ प्रतिशोधान भूर्वा कयाव

1) अन्ध इत्येव एकै अन्ध्या भाव गच्छि  
 विधी विधि उ कर्मनिधि तादृश, इत्येव  
 प्रतिशोधानि एता कर्म गच्छि इत्येव

प्रतिशोधानि अन्ध इत्येव विधी  
 प्रतिशोधानि कयाव उ कर्मनिधि तादृश  
 प्रतिशोधानि भावात् इता प्रतिशोधानि

2) अन्ध तादृश उहो वि अन्ध्या भावुभव  
 प्रतिशोध तादृश प्रतिशोध कयाव एता ताडु  
 अन्ध तादृश कयाव, मानुष प्रतिशोधानि  
 प्रतिशोध अन्ध तादृश तादृश

प्रतिशोधानि प्रतिशोधानि  
 अन्ध इत्येव प्रतिशोध तादृश उ कर्मनिधि  
 कयाव प्रतिशोधानि कयाव प्रतिशोधानि  
 प्रतिशोधानि ताडु प्रतिशोधानि प्रतिशोधानि  
 कयाव प्रतिशोधानि

3.) भावनात्मक होकर (3) होकर भक्तव्य कहे जायेगा  
हम "we belong to Association  
but not to institutions".

ये किस्म के संबंध स्थापित करना भावनात्मक  
आनंद प्राप्त करने के लिए है, अतः भावनात्मक  
आनंद प्राप्त करने के लिए हमें अपने  
व्यक्तिगत जीवन में जो कुछ भी है उसे  
संभालना और उसे अपने आनंद के लिए  
उपयोग करना है।

अतः हमें अपने आनंद के लिए  
अपने जीवन में जो कुछ भी है उसे  
संभालना और उसे अपने आनंद के लिए  
उपयोग करना है।  
हम "we come to belong to  
institution".

4.) निजिवापन के लिए हमें अपने आनंद के लिए  
अपने जीवन में जो कुछ भी है उसे  
संभालना और उसे अपने आनंद के लिए  
उपयोग करना है।  
Association are things, institutions  
are means and ways. we are  
born and live in Association,  
but we moved and Act  
through institutions.

अतः हमें अपने आनंद के लिए  
अपने जीवन में जो कुछ भी है उसे  
संभालना और उसे अपने आनंद के लिए  
उपयोग करना है।

हमें अपने आनंद के लिए  
अपने जीवन में जो कुछ भी है उसे  
संभालना और उसे अपने आनंद के लिए  
उपयोग करना है।



काल विद्विष्य प्रसंग वक्ष्ये तुलसी  
 काले अक्षय यक्ष्ण्डात्ता ता तुल्य  
 प्रसंगे आक्षिप्ति ताव कक्षी लक्ष्मी  
 काले अक्षय यक्ष्ण्डात्ता ता तुल्य  
 (तुलसीकृष्ण = अक्षिप्ति)

तुलसीकृष्ण  
 (तुलसीकृष्ण)